Aarhat Publication & Aarhat Journal's

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Online and Print Journal

Impact Factor: 5.20 (EduIndex)

UGC Approved Journal No - 48833

10th March, 2018

Vol VII Issues No X

Chief Editor

Ubale Amol Baban

Chief Editor

Prin. Dr. Purandhar Dhanpal Nare

Scanned by CamScanner

Aarhat Publication & Aarhat Journal's

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Online and Print Journal

Impact Factor: 5.20 (EduIndex)

UGC Approved Journal No - 48833

10th March, 2018

Vol VII Issues No X

Chief Editor
Ubale Amol Baban

Chief Editor
Prin. Dr. Purandhar Dhanpal Nare

Scanned by CamScanner

Journal On

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Vol VII Issues No X

Copyright:

@ All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording and/or otherwise, without the prior written permission of the publisher.

Disclaimer:

All views expressed in the proceedings are those of the individual contributors. The editor and Publisher are not responsible for the statements made or the opinions expressed by the authors.

Date Of Publication: 10th March, 2018

Publisher:

Pramila.D.Thokle (9822307164)

(Email Id :eiirj1111@gmail.com)

Publication :

Aarhat Publication

108,Gokuldham Park,Dr.Ambedkar Chowk,

Near TV Tower,Badlapur(E),421503

Email ID:**aarhatpublication@gmail.com**.

Scanned by CamScanner

17	राहुल कुलकर्णी	'उद्धवस्त धर्मशाळा:विचार,प्रणाली आणि समाजाच्या विजयातील पराभूतता	69
18	Mr. Kaktikar Salman Abdul	The Demographic Profile Of India: Opportunities And Challenges	76
19	डॉ.देवेंद्र बिरनाळे	निवडक व्यायाम प्रकारांचा कब्बडी खेळाडूच्या वेग व दिशाभिमुकता या क्षमतेवर होणाऱ्या परिणामाचा अभ्यास	81
20	प्रा.अमीन बाणदार	खेळाडूची शारीरिक सुदृढता व महत्व	85
21	Dr.Nitin C Mali & Mr.Venkatesh R Badve	Revitalizing Outcome Based Management Education For Improving Employability	89
22	Miss. Purohit Mayakumari Madanlal	Entrepreneurship Among Marwari And Other Communities: A Comparative Study	100
23	प्रा.एस.एस.पाटील	शिक्षण - समाज अंतरसंबध	107
24	सुनील सुतार	उच्च शिक्षणातील सद्यस्थिती आणि अपेक्षा	110
25	डॉ.दीपक रामा तुपे	भारत में उच्च शिक्षा की संभावनाए	113
26	धनराज बिक्कड़	हुपरी शहरातील चांदी व्यवसायाचा उच्च शिक्षणावर झालेला परिणाम	117
27	डॉ. अमिना बेगम (अफरिन)	जदिद रुजहानात तनकीदी जायेजा	119
28	अन्सारी मसुद	खिता मराठवाडा के स्कुलों में उर्दु तालीम मसायल और हल	129
29	बिलाल अहमद दार	असरेहाजीर में उर्दु जबान और आदब के मसायल और इनका हल	132
30	शेख हासिबुल	उर्दु जरिए तालीम और रोजगार के मवाखे	136
31	डॉ. बिलकिस बेगम	जदिदीयत उर्दु अफसाने की हाईत	138
32	डॉ. सबिहा सय्यद	इलाखा मराठवाडा में समाजी और तहजीबी मिलाप और जबाने उर्दु	142
33	डॉ. साजिद अलि कादरी	हिंदुस्थान की विश्वविद्यालयों में उर्दु तहकिक का इजमाली जायेजा	146

Scanned by CamScanner

भारत में उच्च शिक्षा की संभावनाएँ

डॉ. दीपक रामा तुपे

सहायक प्राध्यापक, स्नातक तथा स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,

दत्ताजीराव कदम आर्टस्, साइंस एंड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी - 416 115.

प्रस्तावना :

शिक्षा अध्ययन-अध्यापन की अनवरत प्रक्रिया है। शिक्षा से ज्ञान की प्राप्ति होती है। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त अनुभवों का व्यावहारिक परिमार्जन करती है-शिक्षा। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान का विकल्प नहीं थी। विद्या वह है; जो व्यक्ति को अज्ञान, ईर्ष्या, घृणा तथा संकीर्ण मनोवृत्तियों से विमुक्त करती है ; अपितु शिक्षा को वह प्रकाश माना गया; जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर सके। रामसकल पांडेय अनुसार-''शिक्षा की प्रक्रिया जीवन भर अविकल रूप से चलती रहती है और जन्म से मृत्यु के बीच की अवधि में कोई भी शक्ति उसमें बाधक नहीं हो सकती।''[1] मनुष्य किसी-न-किसी तरीके से शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा की गतिशील प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत चलती है। डॉ. रामपाल सिंह कहते हैं कि ''शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है और सामाजिक पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने के योग्य बनाती है।''[2] वास्तविकता के साथ अनुकूलित और समायोजित करने की क्षमता शिक्षा में ही होती है। शिक्षा मानव जीवन की कुँजी है। दरअसल शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सुसंस्कृत एवं सभ्य बनाना है। इस मनुष्य को सभ्य बनाने की प्रक्रिया में शिक्षा का महत्व अनन्यसाधारण रहा है। आने वाले दिनों में शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न संभावनाएँ विकसित होगी; जिनका विवेचन-विश्लेषण निम्नलिखित है-

1) बाजारोन्मुखी शिक्षा:

निजीकरण के नाम पर कई विदेशी विश्वविद्यालय भारत में आएँगे। वे भारतीय संस्कृति कितना पढ़ाएँगे? बाजार की दुनिया में क्या-क्या परोसा जाएगा; इसकी कोई गारंटी नहीं है। कोई विश्वविद्यालय ज्ञानार्जन के लिए देश में आ रहा है तो उसका नाम ही विश्वविद्यालय है। लेकिन यदि वह विश्वविद्यालय सिर्फ सूचना ही देगा और ज्ञान एवं भारतीय संस्कृति नदारद होगी तो वह शिक्षा किस काम की होगी? यह बताया नहीं जा सकता। भूमंडलीकरण के नाम पर शिक्षा का भूमंडीकरण होगा।

2) व्यवसायिक पाठ्यक्रमों को बढ़ावा:

भविष्य में व्यवसायिक केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। देश-विदेश की कंपनियों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए व्यवसायिक पाठ्यक्रम शुरू होंगे। जहाँ रोजगार की संभवना होगी, वहीं पाठ्यक्रमों को भविष्य में बढ़ावा मिलेगा। हर व्यक्ति शिक्षा हासिल कर नौकरी पाना चाहता है, इसलिए जिस क्षेत्र में वह जाना चाहता है वहाँ के व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेगा; जिससे उसको नौकरी मिल सके। यदि शैक्षिक संस्थान और कंपनी के बीच समझौता होगा तो कंपनी को मनचाहा कर्मचारी वर्ग उपलब्ध होगा और छात्रों को रोजगार का अवसर प्राप्त होगा।

3) मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन :

भविष्य में कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्तर की मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन आएगा। इसके लिए स्वतंत्र प्राइवेट संस्थान नियुक्त किया जाएगा। यह प्राइवेट संस्थान कॉलेज एवं विश्वविद्यालय का स्तर तय करेगा। आज तक कॉलेज और विश्वविद्यालय का मूल्यांकन राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा हो रहा है। लेकिन भविष्य में यह स्तर किसी प्राइवेट संस्थान तय करेगा। इसमें कॉलेज एवं विश्वविद्यालय का सही मूल्यांकन होगा। यदि नैक द्वारा हमारे कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों का सही मूल्यांकन होता है तो सवाल उठता है कि देश का एक भी विश्वविद्यालय विश्व के पहले 200 विश्वविद्यालयों में क्यों नहीं अर्थात् हमारे विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा में टिक नहीं पा रहे हैं; जिसके कारण हमारे यहाँ

Scanned by CamScanner

नोबेल प्राप्त पुरस्कार विजेताओं की संख्या भी बहुत ही कम नजर आती है। भविष्य में यदि मूल्यांकन का कार्य कोई निजी संस्थान पारदर्शी करेगा तो हमारे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आएगा।

4) अनुसंधान कार्य को बढ़ावा:

अनुसंधान का मकसद ही है कि ज्ञान की खोज करना या विधिवत गवेषणा करना। ज्ञान की किसी समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया है अनुसंधान। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो विवेकपूर्ण अध्ययन अनुसंधान कहलाता है। अनुसंधान की बढ़ती मांग के अनुसार शोध कार्य को प्रोत्साहन दिया जाएगा। कला तथा मानव्यविद्या शाखा का समझौता अंतरविद्याशाखीय शोध कार्य को बढ़ावा देगा। इस शोध कार्य से प्रोफेशनल कोर्स के अवसर खुल जाएँगे। इससे ज्ञानी एवं स्कीलप्राप्त छात्र की मांग देश-विदेश में बढ़ जाएगी। भविष्य में ज्ञान का समाज दुनिया के किसी भी समाज से ज्यादा प्रतिस्पर्धात्मक समाज बन जाएगा। इसलिए भविष्य में किसी देश की समृद्धि का स्तर वहाँ की शिक्षा एवं शोध कार्य से आंका जाएगा।

5) आत्मनिर्भर विश्वविद्यालय :

केंद्र सरकार की ओर से दी जाने वाली वित्तीय सहायता दिनोंदिन कम की जा रही है। शिक्षा का बजट सरकार द्वारा कम किया जा रहा है। विश्वविद्यालय को आत्मनिर्भर की ओर संकेत किया जा रहा है। सरकार की नई नीति के अनुसार शिक्षा दिलाना सरकार का काम नहीं है; जो व्यक्ति शिक्षित बनना चाहता है वे खुद निजी संस्थान की फीस अदा करें और अपनी शिक्षा पूरी करें। इससे विश्वविद्यालय भी आत्मनिर्भर होगा और छात्रों को रोजगार भी मिलेगा। हमारे पुराने तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय आत्मनिर्भर और स्वतंत्र थे। तत्कालीन समय में उनका कोई छात्र बेकार नहीं रहता था। वे विश्वविद्यालय आत्मनिर्भर थे जो कि समय की मांग के अनुसार छात्र का व्यक्तित्व सर्वांगीण रूप से विकासित करते थे।

6) उच्च शिक्षा का निजीकरण :

वर्तमान दौर उच्च शिक्षा के निजीकरण का है। उच्च शिक्षा का निजीकरण रोकना अप्रासंगिक एवं अव्यावहारिक होगा। वस्तुत: इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन, कम्प्यूटर, प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में शिक्षा का तेजी से निजीकरण हो रहा है। आगे चलकर उच्च शिक्षा का पूरी तरह से निजीकरण होगा। डॉ. राहुल मिश्र ने 'इक्कीसवीं सदी में भारतीय शिक्षा: संभावनाएँ और चुनौतियाँ' आलेख में लिखा है कि,''शिक्षा के निजीकरण ने जहाँ एक ओर ज्ञान की सुलभता के अवसरों की वृद्धि की है, वहीं दूसरी ओर शिक्षण-प्रशिक्षण प्रविधियों, शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक के अनुप्रयोगों, कक्षाओं के स्वरूप बदलावों, सूचनाओं की असीमित उपलब्धताओं और व्यावहारिकताओं को, खुलेपन को बढ़ावा दिया है।''[3] जहाँ निजीकरण ने ज्ञान की सुलभता की है वहाँ प्रौद्योगिकीय अनुप्रयोगों को भी बढ़ावा दिया है।

7) प्रवेश का आधार सिर्फ 'मेरिट':

भविष्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश का आधार सिर्फ 'मेरिट' ही रहेगा। सरकारी कॉलेजों की संख्या कम होगी और प्राइवेट कॉलेजों में शिक्षा का निजीकरण होगा। यदि कई कॉलेजों का निजीकरण होगा तो जाहिर सी बात है कि प्राइवेट कॉलेज के प्रवेश का आधार सिर्फ 'मेरिट' ही रहेगा।

8) ऑनलाइन मूल्यांकन प्रणाली:

भविष्य में ऑनलाइन मूल्यांकन प्रणाली प्रचलित होगी। गणित, कंप्यूटर साइंस, स्पर्धा परीक्षा का मूल्यांकन ऑनलाइन हो रहा है। ऑनलाइन मूल्यांकन के अंतर्गत वेब संसाधनों और वेब स्रोत की सहायता से विभिन्न तकनीक विकसित होगी। उदा. सेट/नेट परीक्षा, एमएससीआईटी परीक्षा तथा अन्यान्य स्पर्धा परीक्षा का ऑनलाइन हो रही है। भविष्य में इसका प्रचलन बढ़ जाएगा। भविष्य में परीक्षा की पुरानी मूल्यांकन की पद्धति आउट डेटेड हो जाएगी और ऑनलाइन मूल्यांकन की प्रणाली प्रचलित होगी।

Scanned by CamScanner

9) डिजिटल साधनों का विकास :

भविष्य में नए-नए डिजिटल साधनों का विकास हो जाएगा। डिजिटल साधनों के आधारित पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा साध्य होगी। आईसीटी के आधार शिक्षा संस्थानों की क्षमता निर्माण के गुणक पूरी तरह से कार्यान्वित होंगे। इससे ज्ञान का सशक्तीकरण होगा और नए बहु-विषयक ज्ञान क्षेत्रों को प्रोत्साहन मिलेगा। नए-नए यू-ट्यूब चैनलों की भरमार आएगी। ई-बुक प्रचलन बढ़ेगा। डिजिटल लाइब्रेरी की संख्या में दिन-ब-दिन इजाफा होगा। वर्चुअल क्लासरूम की संख्या में बढ़ोतरी होगी। इससे दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। छात्र ऑनलाइन पाठ्यक्रम से उपाधि भी हासिल करेंगे। इसमें छात्र केवल ध्यानपूर्वक पाठ सुनेंगे ही नहीं बल्कि वे अध्यापक से सवाल भी कर सकेंगे। टेली-एज्युकेशन के तहत एक साथ उस क्षेत्र की कई कक्षाओं में पढ़ाया जा सकता है। ई-लर्निंग प्रणाली के तहत पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को अंतरजाल के द्वारा घर-घर पहुँचाया जा सकता है। पाठ्यसामग्री हर वक्त ऑनलाइन उपलब्ध होगी। इसके लिए छात्रों को स्वंतत्र आईडी और पासवर्ड दिया जाएगा। वह वेबसाइट पर लॉगिन कर ऑनलाइन नोट्स पा सकेगा।

10) प्रशिक्षित तथा गुणवत्तापूर्ण प्राध्यापकों की मांग:

भविष्य में ऐसे प्रोफेसर का चयन शिक्षा क्षेत्र में होगा; जो तकनीकी दृष्टि से प्रशिक्षित है और जिसके पास गुणवत्ता है। बाजारीकरण एवं व्यवसायीकरण के युग में वही शिक्षा संस्थान टिक पाएगा जो पूरी तरह से प्रशिक्षित है और जिसके पास गुणवत्ता है। यदि प्राध्यापक गुणवत्तापूर्ण एवं प्रशिक्षित होगा तो उनका छात्र भी प्रशिक्षित होगा और विषय का ज्ञानी भी होगा। यदि ऐसा ज्ञानी एवं प्रशिक्षित छात्र जिस शिक्षा संस्थान से निकलेगा बाजार में उसी की मांगहोगी। भविष्य में प्रशिक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण प्राध्यापकों की मांग बढ़ेगी।

11) ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली :

उच्च शिक्षा में छात्रों की संख्या बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा यह निर्णय किया गया है कि कला एवं मानवविद्या जैसे विषयों में ऑनलाइन उपाधि मिलेगी। मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावडेकर ने इस संदर्भ में कहा कि जो विश्वविद्यालय नैक में A+ है, उन्हीं 15 फीसदी विश्वविद्यालयों को ऑनलाइन उपाधि पाठ्यक्रम शुरू करने की अनुमति दी जाएगी। दरअसल सरकार ने एनरोलमेंट बढ़ाने के लिए यह कदम उठाया है। बताया जा रहा है कि इससे उच्च शिक्षा में एनरोलमेंट 25 से 30 प्रतिशत हो जाएगा। ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को स्वतंत्र छात्र बनने योग्य बना देती है।

12) अध्ययन-अध्यापन का अंतर्राष्ट्रीय समझौता :

भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर अध्ययन-अध्यापन को लेकर समझौता होगा; जिससे गुणवत्ता में सुधार आएगा। इस साझेदारी के तहत दोनों पक्षों को अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से लाभ होगा। इससे छात्रों की गुणवत्ता में सुधार आएगा और उसका लाभ निजी और सरकारी सेक्टर में होगा।

13) गुणवत्ता और स्वायत्तता :

गुणवत्ता के बिना शिक्षा का उद्देश्य अधूरा है। जिसके पास गुणवत्ता है उस संस्थान की अलग पहचान बनेगी। भविष्य में जिसके पास गुणवत्ता होगी वही संस्थान स्वायत्त होगा। ध्यातव्य बात यह कि वह अराजकता का रूप धारण न करें। उच्च शिक्षा में ऐसी नीतियाँ बनाने एवं लागू करने की जरूरत है; जिससे हमारी शिक्षा विश्व स्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण हो। इसलिए हमें भविष्य की नजाकत को ध्यान में रखते हुए अपने पाठ्यक्रम, अध्ययन-अध्यापन की प्रणाली में बदलाव करना होगा। प्रौद्योगिकी आधारित नई शिक्षा प्रणाली को अपनाना होगा। हर विश्वविद्यालय स्वायत्तता पाता है तो निश्चित ही गुणवत्ता में सुधार आ जाएगा।

14) नवाचार :

भविष्य में उच्च शिक्षा में नवाचार को प्रधानता दी जाएगी। इसमें नए चिंतन एवं सृजन पद्धतियों को बढ़ावा दिया जाएगा। इसके अलावा शोध कार्य के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा दिया जाएगा। उचित शोधार्थी की खोजबीन कर उसे इस प्रक्रिया में

Scanned by CamScanner

ढालना होगा तो ही नवाचार की संकल्पना उच्च शिक्षा के माध्यम से साकार होगी। इसके लिए छात्रों को शुरुआत में लघु शोध परियोजना देकर उनमें शोध दृष्टि का विकास करना होगा तो ही नवाचार की संकल्पना साकार होगी।

15) रोजगारमूलक परियोजनाएँ :

उच्च शिक्षा क्षेत्र में अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं। रोजगार और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सरकारी स्तर पर कई योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है। मानव विकास के बुनियादी मापदंड में तालमेल नहीं होने के कारण उसकी गति धीमी पड़ गई है। धन की गरीबी का ज्ञान की गरीबी से विशेष संबंध है। ग्रामीण, दूरस्थ आँचलों में ज्ञान की गंगा आज भी नहीं पहुँची है। जानकारी एवं ज्ञान के अभाव में वे संसाधनों का पर्याप्त उपयोग नहीं कर पाते। कई परियोजनाओं के बावजूद उनकी शिक्षा, चिकित्सा और बुनियादी रोजगार की प्रक्रिया प्रभावित होती है। अब समय आ चुका है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के लिए लागू परियोजनाओं को समेकित ढंग से किसी सुनिश्चित क्षेत्र में लागू कर परिणामों को देखा जाए। सार यह कि मानवीय क्षमताओं और अपने संसाधनों का उपयोग बेहतर ढंग कर शिक्षा के गुणत्मक विकास की संभानाएँ दिन–ब–दिन बढ़ाई जाएगी। इसके लिए शिक्षा और रोजगार का समन्वय जरूरी है।

16) डिजिटल पुस्तकालय:

भविष्य में दुनिया की तमाम बुक इलेक्ट्रॉनिक बन जाएँगे। सजिल्द बुक की संकल्पना आउट डेटेड हो जाएगी। आगे चलकर इलेक्ट्रॉनिक बुक का प्रचलन बढ़ जाएगा और इससे दुनिया के तमाम पुस्तकालय ऑनलाइन हो जाएँगे। ये डिजिटल पुस्कालय का एक नेटवर्क होगा; जिससे दुनिया के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति देश–विदेश की किसी लाइब्रेरी का लाभ घर बैठे उठाएगा। इससे पुस्तक आऊट ऑफ प्रिंट नहीं होगा, जबकि 24 घंटे आसानी से अंतरजाल के जरिए उपलब्ध होगा। इस संदर्भ में डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, का कहना है कि ''जब कोई छात्र किसी खास पुस्तक को पढ़ना चाहता है तो ऑनलाइन के माध्यम से व्यक्ति वहाँ तक पहुँच सकता है। डिजिटल पुस्तकालय के लिए टेली एजुकेशन सॉफ्टवेयर एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है।''[4]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि व्यावहारिक भी हो। हमें ऐसा पाठ्यक्रम एवं शिक्षा अधिगम प्रक्रिया तैयार करनी होगी। उच्च शिक्षा को चरित्र निर्माण से लेकर जीवन निर्माण तक एवं व्यवसायिक कुशलता से लेकर तकनीकी कुशलता तक विस्तृत करना होगा।

➢ संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) डॉ. शालिग्राम त्रिपाठी, शैक्षिक मनोविज्ञान, (दिल्ली, व्येंकटेश प्रकाशन: प्रथम संस्करण 1973) पृ. 2

2) डॉ. रामपाल सिंह, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, (आगरा, पुस्तक प्रकाशन : प्रथम संस्करण 1981) पृ. 4

3) http://bundela-desa-ke.blogspot.in/2013/11/blog-post.html?m=1

4) डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, महाशक्ति भारत, (नई दिल्ली, प्रभात प्रभात प्रकाशन: प्रथम संस्करण: 2005) पृ. 94

Scanned by CamScanner